

कार्ल युंग: योगदान, आलोचना और भूमिका

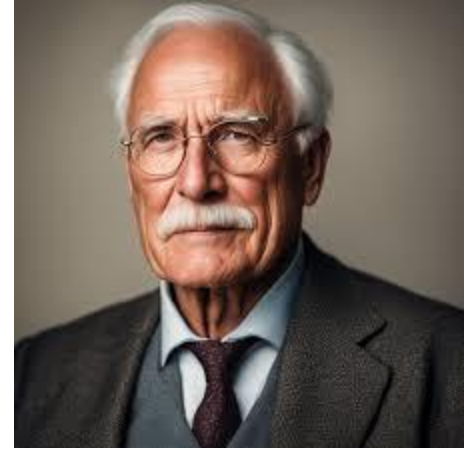
22.02.2025

कार्ल युंग के योगदानों की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

मनोविज्ञान के युग के विश्लेषणात्मक संप्रदाय के योगदानों का मूल्यांकन कीजिए।

.एक मनोवैज्ञानिक के रूप में युग के भूमिका की व्याख्या करें।

कार्ल युंग की जीवनी



- • जन्म: 26 जुलाई 1875, स्विट्जरलैंड
- • मृत्यु: 6 जून 1961
- • शिक्षा: बेसल विश्वविद्यालय
- • फ्रायड के शिष्य, बाद में अलग रास्ता अपनाया
- • प्रमुख संस्थान: बर्लिन साइकोएनालिटिक सोसाइटी, स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट

युंग के प्रमुख योगदान

- सामूहिक अचेतन (Collective Unconscious)
- आर्केटाइप्स (Archetypes)
- व्यक्तित्व के प्रकार (Introvert & Extrovert)
- स्व-प्राप्ति (Individuation)
- मनोविश्लेषण से अलग दृष्टिकोण
..सिंक्रोनिसिटी (Synchronicity)

सामूहिक अचेतन

- सभी इंसानों के अचेतन मन में साझा स्मृतियाँ होती हैं
- सांस्कृतिक रूप से साझा प्रतीक और मिथक
- उदाहरण: विभिन्न देशों में हीरो और शैतान के समान प्रतीक



आर्केटाइप्स (Archetypes)

- मनोविज्ञान में प्राचीन प्रतीकों की अवधारणा
- मुख्य आर्केटाइप्स:
 - - हीरो
 - - मेंटॉर
 - - शैडो (Shadow)
 - - एनिमा और एनिमस



व्यक्तित्व के प्रकार

- • अंतर्मुखी (Introvert) – शांत, आत्मचिंतन करने वाले
- • बहिर्मुखी (Extrovert) – सामाजिक, ऊर्जावान
- • आधुनिक MBTI परीक्षण में उपयोग

इंडीविडुएशन (Individuation)

- • आत्मविकास की प्रक्रिया
- • सचेत और अचेतन का संतुलन
- • व्यक्ति अपने असली स्वरूप को समझता है

- **सिंक्रोनिसिटी (Synchronicity):** जब इत्तेफाक सिर्फ इत्तेफाक नहीं होता!
- आप किसी पुराने दोस्त के बारे में सोच रहे होते हैं और अचानक उसी समय उसका फोन आ जाता है। या आप किसी किताब में किसी खास विचार को पढ़ते हैं, और अगले ही दिन वही विचार आपको किसी और संदर्भ में सुनने को मिलता है। क्या ये सिर्फ संयोग हैं?
- युंग के अनुसार, नहीं! ये Synchronicity (समकालिकता) है – यानी ऐसे इत्तेफाक जो देखने में बेतरतीब लगते हैं, लेकिन उनके पीछे कोई गहरी कनेक्शन होती है।
- **सिंक्रोनिसिटी के उदाहरण:**
 - **ड्रीम एंड रियलिटी कनेक्शन:** सपने में किसी प्रतीक को देखने के बाद असल जीवन में उससे जुड़ी घटना का होना।

युंग के विचारों की आलोचना

- • वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी
- • अत्यधिक दार्शनिक और अमूर्त विचार
- • फ्रायड से अलगाव
- • मनोविश्लेषण के मूल तत्वों से भिन्न दृष्टिकोण

युंग की आलोचना:

- सबूत की कमी: युंग की कई बातें सिर्फ विचार हैं, उनके पास पक्का सबूत नहीं है।
- जटिल भाषा: युंग की भाषा बहुत कठिन है, जिसे समझना मुश्किल है।
- रहस्यमय विचार: युंग के विचार थोड़े रहस्यमय हैं, जैसे जादू-टोने की बातें।

मनोविज्ञान में युंग का प्रभाव

- • आधुनिक व्यक्तित्व परीक्षणों में योगदान
- • कला, साहित्य और संस्कृति पर प्रभाव
- • मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-विकास में उपयोग

निष्कर्ष

- • यंग ने मनोविज्ञान को गहराई और आध्यात्मिकता दी
- • उनके सिद्धांत व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण हैं
- • हालाँकि, उनके विचारों की वैज्ञानिक प्रमाणों की कमी के कारण आलोचना होती है

विश्लेषणात्मक संप्रदाय का मूल्यांकन

युंग का विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) मनोविश्लेषण से भिन्न है क्योंकि इसमें केवल अचेतन की कामुकता पर बल नहीं दिया गया, बल्कि इसमें आध्यात्मिक और सांस्कृतिक कारकों को भी महत्व दिया गया।

- **मूल्यांकन के सकारात्मक पक्ष**
- मनोविज्ञान और पौराणिकता को जोड़ने में सहायक।
- कला, धर्म और सांस्कृतिक अध्ययन में योगदान।
- व्यक्तित्व सिद्धांतों के विकास में सहायक।
- **नकारात्मक पक्ष**
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कठिन प्रमाणिकता।
- मनोविश्लेषण की तुलना में कम व्यवहारिक प्रयोग।
- कुछ अवधारणाएँ व्यक्तिपरक और अस्पष्ट।

इकाई 7 नव-फ्रायडवादी*

संरचना

- 7.0 प्रस्तावना
- 7.1 कार्ल गुस्ताव युंग
 - 7.1.1 मन की संरचना
 - 7.1.2 आद्यप्ररूप एवं समक्रमिकता
 - 7.1.3 अभिवृत्ति एवं कार्य : मनोवैज्ञानिक प्रकार
 - 7.1.4 तुल्यता एवं एन्ट्रोपी का नियम
 - 7.1.5 व्यक्तित्व विकास
- 7.2 अल्फ्रेड एडलर
 - 7.2.1 हीनता-श्रेष्ठता
 - 7.2.2 कल्पित लक्ष्य
 - 7.2.3 सामाजिक अभिरुचि
 - 7.2.4 जीवन शैली
 - 7.2.5 सर्जनात्मक शक्ति
 - 7.2.6 जन्म क्रम
- 7.3 केरेन हार्नी
 - 7.3.1 मूल चिन्ता एवं मूल विद्वेष
 - 7.3.2 मनस्तापी आवश्यकताएँ
 - 7.3.3 चिन्ता को कम करने के प्रयास
- 7.4 एरिक एरिकसन
 - 7.4.1 जीवन चक्र : मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाएँ
- 7.5 हैरी स्टैक सुल्लीवान
 - 7.5.1 व्यक्तित्व की गतिकी
 - 7.5.2 अन्तर्वैयक्तिक स्थितियों के लिए आद्य प्ररूप के रूप में पोषण
 - 7.5.3 आत्म का मानवीकरण
 - 7.5.4 विकासात्मक अवस्थाएँ
- 7.6 एरिक फ्रोम
 - 7.6.1 स्वतन्त्रता से पलायन
 - 7.6.2 मूल आवश्यकताएं
 - 7.6.3 व्यक्तित्व प्रकार
- 7.7 निष्कर्ष
- 7.8 सारांश
- 7.9 मुख्य शब्द

*ब्रुशाली पाठक, शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

7.10 पुनरावलोकन प्रश्न

7.11 सन्दर्भ एवंपढ़ने के सुझाव

7.12 ऑनलाइन संसाधन

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप सक्षम होंगे :

- व्यक्तित्व सिद्धांत में फ्रायडवादियों के योगदान को संक्षेप में बताने में;
- युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की व्याख्या करने में;
- एडलर के व्यक्तिगत मनोविज्ञान पर चर्चा करने में;
- हार्नी के मनोविश्लेषणात्मक अंतवैयक्तिक में अंतर करने में;
- फ्रोम के मनोविश्लेषणात्मक सामाजिक मनोविज्ञान को जानने में;
- एरिकसन के विकास के मनोसामाजिक सिद्धांत का परीक्षण करने में;
- सुल्लीवान का अन्तरवैयक्तिक सिद्धांत की व्याख्या कर सकेंगे।

7.0 प्रस्तावना

सिगमंड फ्रायड ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है और इस प्रकार अपने कई अनुयायियों को आकर्षित किया है। हालांकि कामुकता पर अत्यधिक बल देने के लिए उनकी बहुत आलोचना हुई। वर्षों से कई अन्य सिद्धान्तवादी, जो फ्रायड के सिद्धान्त के प्रति आकर्षित थे, ने व्यक्तित्व एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने के लिए अपने विचारों को अनुकूलित किया और प्रस्तुत किया। इन सिद्धान्तवादियों को नव-फ्रायडवादी के रूप में संदर्भित किया गया था। जिन्होंने बचपन के अनुभवों के महत्व पर फ्रायड के साथ सहमति व्यक्त की लेकिन कामुकता पर जोर कम कर दिया। उनका ध्यान समग्र (फ्रायड की तुलना में) था क्योंकि उन्होंने किसी व्यक्ति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों को ध्यान में रखा था। इस इकाई में हम इनमें से कुछ नव-फ्रायडवादियों पर चर्चा करेंगे।

7.1 कार्ल गुस्ताव युंग

कार्ल युंग ज्यूरिख में मनोचिकित्सक के रूप में काम कर रहे थे, जब वह *स्वपनों की व्याख्या* को समझना। वह अवधारणाओं से बहुत प्रभावित थे एवं उन्होंने फ्रायड के साथ अपने कार्य एवं लेखन को साझा करना शुरू कर दिया, जिसने दोनों के मध्य एक नियमित पत्राचार को चिन्हित किया। 7 अप्रैल, 1907 को फ्रायड ने युंग को लिखा, "कि आपने मुझे भविष्य के लिए आत्मविश्वास के साथ प्रेरित किया है, कि अब मुझे एहसास है कि मैं बाकी सभी की तरह मेरा भी स्थान लिया जा सकता है और मैं आपसे अच्छा कार्य करने की आशा नहीं कर सकता, जैसा कि मैंने आपको समझा है कि आप मेरे कार्य को निरंतर चलाते हुए उसे पूरा करेंगे (फ्रायड/युंग 1974, पृष्ठ 27)। इस प्रकार फ्रायड ने युंग को अपना अकादमिक उत्तराधिकारी बनाने का निर्णय किया। लेकिन धीरे-धीरे व्यक्तिगत होने के साथ-साथ दोनों के मध्य सैद्धान्तिक मतभेद

दूर होने लगे। वर्ष 1913 में उनके पत्राचार और सम्बन्ध समाप्त हो गए। बाद में, युंग ने अपने स्वयं के स्कूल की स्थापना की और इसे **विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान** कहा। निम्नलिखित अनुभाग में, हम युंग के विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के सिद्धांतों और योगदान को रेखांकित करेंगे।

7.1.1 मन की संरचना

व्यक्तित्व के लिए युंग का दृष्टिकोण फ्रायड के दृष्टिकोण से अलग था, क्योंकि उनका मानना था कि मुख्य रूप से उन कल्पनाओं और स्वप्नों के निर्माण की व्याख्या करना था, जो प्रतीकों एवं विषयों का अनुकरण करते हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभव से अधिक है। इस प्रकार, व्यक्तित्व को तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया गया था – चेतन अहं, व्यक्तिगत अचेतन एवं सामूहिक अचेतन।

चेतन अहं

व्यक्तित्व के चेतन भाग के रूप में कार्य करते हुए, अहं में प्रत्यक्षण, स्मृतियां, विचार एवं भावनाएँ शामिल हैं। किसी व्यक्ति की आत्म-जागरूकता, पहचान एवं निरंतरता में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह मोटे तौर पर अहं की फ्रायडवादी अवधारणा से मेल खाती है।

व्यक्तिगत अचेतन

यह फ्रायड के उस अचेतन के समान है। लेकिन युंग ने कुछ और विशेषताओं की चर्चा की और इन्हें शामिल किया। जिसके कारण असावधानी या उपयोग में कभी जागरूकता का हिस्सा नहीं है, परन्तु इच्छाशक्ति के प्रति सचेत हो सकती है। इसमें ऐसे अनुभव भी हो सकते हैं जो कभी चेतन थे, अपनी तीव्रता को भूल गए, दबा दिए गए या अनदेखा कर दिये गये और खो गए। इसमें ऐसे विचार एवं आवेग भी शामिल हैं जिन्हें चेतन से सक्रिय रूप से वापस लिया जा सकता है इसमें ऐसे उद्देश्य शामिल थे, जो व्यक्ति के अहं के लिए अस्वीकार थे। युंग के लिए *अचेतन प्रकृति में पूर्वव्यापी* और संभावित दोनों हैं। इस प्रकार, अतीत एवं भविष्य की प्रत्याशा दोनों के लिए उन्मुख है (युंग, 1916)। अचेतन तक प्रतिपूरक कार्य के रूप में भी कार्य करता है। यदि किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण एक दिशा में बहुत अधिक झुकता है, तो अचेतन व्यक्ति कल्पनाओं एवं स्वप्नों का उत्पादन करके इसकी भरपाई कर सकता है और इसे संतुलित करने की विपरीत पद्धति पर बल देता है (युंग, 1916)।

सामूहिक अचेतन

सामूहिक, या पारवैयक्तिक अचेतन वह स्तर है जो व्यक्तिगत अचेतन की तुलना में अधिक गहरा होता है। सामूहिक अचेतन युंग का सबसे महत्वपूर्ण परन्तु विवादस्पद सम्प्रत्यय है। यह "कुछ व्यक्तिगत से अलग है और सभी पुरुषों के लिए आम है, क्योंकि इसकी मौजूदगी हर जगह पाई जा सकती है" (युंग, 1917, पृष्ठ 66)। यह पूर्वजों के अतीत से विरासत में मिली छवियों एवं विचारों का भण्डार है, जिसमें मनुष्यों के नस्लीय इतिहास और उनके पूर्व-मानव और पशु वंश शामिल हैं (हॉल, लिंडजे, और कैम्पबेल, 1957)। इन प्रधान छवियों को, जिसे आदिरूप के रूप में जाना जाता है, को विशेष रूप से कुछ बाहरी घटनाओं का जवाब देने के लिए पूर्वसूचनाएँ, एवं कुछ दिशाओं में अनुभव को आकार देने की क्षमता है (युंग, 1936, पृष्ठ 66)। इस प्रकार, वे

वर्तमान अनुभवों के लिए लचीला टेम्पलेट या मॉडल बन जाते हैं और बाहरी दुनिया-व्यक्तिगत अचेतन के साथ एक व्यक्ति की अन्तः क्रियाएं के स्तर को आकार देते हैं।

व्यक्तिगत एवं सामूहिक अचेतन मन के दो अचेतन क्षेत्र हैं जो मनुष्यों के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। “यह (अचेतन) संभावनाएं रखता है जो चेतन मन से परे हैं क्योंकि इसके निपटान में सभी अचेतन सामग्री, सभी चीजें हैं जो भुला दिया गया है या अनदेखा कर दिया गया है, साथ ही साथ अनगिनत शताब्दियों के ज्ञान एवं अनुभव को भी, जो इसके चिर स्थायी अंगों में रखा गया है” (युंग, 1953, पृष्ठ 114)। युंग ने चर्चा की थी कि अहं द्वारा अचेतन के ज्ञान की अज्ञानता के परिणामस्वरूप जागरूक प्रक्रियाओं का विरूपण हो सकता है। अचेतन प्रक्रियाओं की यह हार या उपेक्षा, फोबिया, भ्रम और अन्य तर्कहीनता जैसे लक्षणों का कारण बन सकती है।

आद्यप्ररूप

आद्यप्ररूप सामूहिक अचेतन के संरचनात्मक कारक है। उन्हें आदिकालीन प्रतिमाएँ अथवा पौराणिक प्रतिमाएं कहा गया। यह पीढ़ी दर पीढ़ी बार-बार होने वाले अनुभवों के लिए एक स्थायी भंडार है। उदाहरण के लिए, कई पीढ़ियों ने सूर्य के उदय और फिर अस्त होने की घटना को देखा है। युंग के अनुसार, इस शानदार घटना की पुनरावृत्ति सामूहिक अचेतन ये सूर्य-देवता के प्रतीक के रूप में समय के साथ तय हो गई। यह आद्य प्ररूप अपने आप में शक्तिशाली, प्रभुत्वशाली, प्रकाश देने वाले शरीर का प्रतीक है जिसे लोग या तो उपेक्षा करने लगे या पूजा करने लगे। सामूहिक अचेतन में आद्य प्ररूप पैतृक भावनात्मक जीवन के अवशेष हैं (युंग, 1917)।

ये वास्तविक शारीरिक अनुभव स्मृतियाँ नहीं है, बल्कि दोहराया जाने वाले व्यक्तिपरक भावनात्मक प्रक्रियाएं हैं जो मानव अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। युंग ने बाल-देवता, माँ, चालबाज या जादूगर, नायक, पुराने बुद्धिमान व्यक्ति, आदि कई आद्य प्ररूपों की पहचान की थी। हालांकि इनमें से कुछ अलग-अलग प्रणालियों के व्यक्तित्व के रूप में विकसित हुए (हॉल, लिन्डेस एवं कोम्पबेल, 1957)। वे हैं : परसोना, एनीमा एवं एनीमस, और छाया।

परसोना : यह वह मुखौटा है जो व्यक्ति समाज की जरूरतों एवं आवश्यकताओं के अनुसार पहनता या अपनाता है, हम अन्य के समक्ष वैसा ही अभिनय करते हैं जैसा कि एक समाज हमसे उम्मीद रखता है या चाहता है। इसके साथ बड़ा खतरा मौजूद है “लोग वास्तव में जो विद्यमान है पर विश्वास कर रहे कि वे क्या होने का दावा कर रहे हैं” (युंग, 1917, पृष्ठ 193)। यदि अहं परसोना के साथ बहुत अधिक पहचाना जाता है, तो व्यक्ति उस हिस्से के प्रति अधिक सचेत हो सकता है, जो वह वास्तविक भावनाओं की तुलना में खेल रहा है। इस प्रकार व्यक्ति एक स्वायत्त होने की अपेक्षा समाज का एक मात्र प्रतिबिंब बन जाता है।

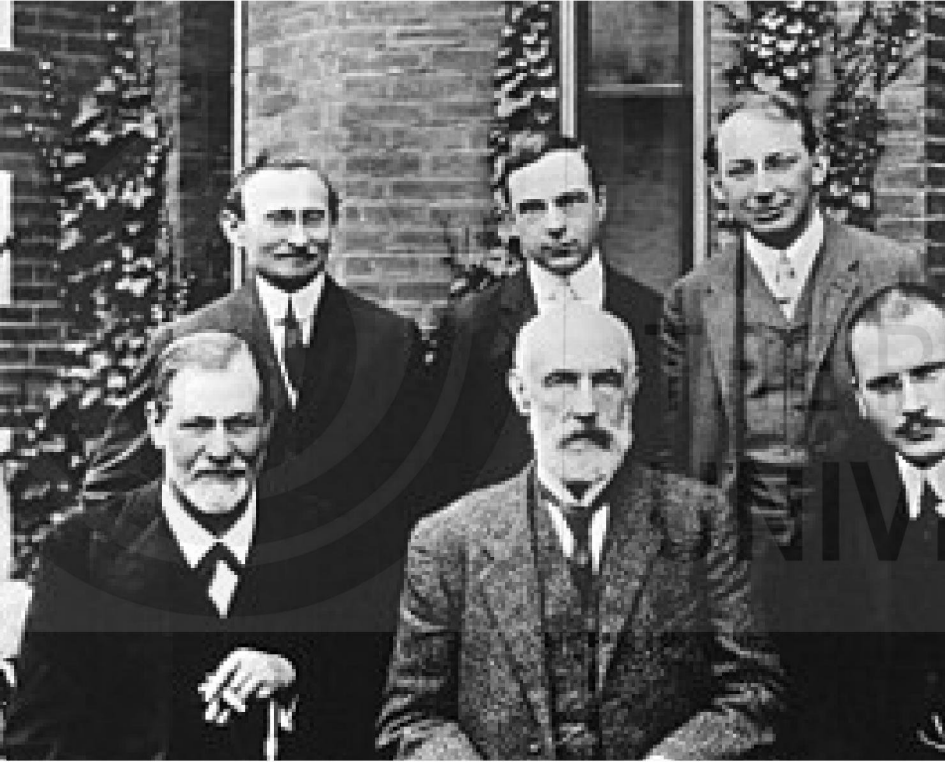
एनीमा एवं एनीमस : पुरुष पूर्णतः प्रकृति में पुरुष के ही गुण नहीं रखता है अपितु पुरुष के चरित्र में स्त्री तत्व या अन्तर्ज्ञान होते हैं जो परम्परागत रूप से दमित हैं। इससे अचेतन के भीतर कामेच्छा तनाव का निर्माण हो सकता है। युंग ने प्रस्तावित किया कि एक स्त्री को एक साथी के रूप में देखने के दौरान, एक आदमी अनजाने में खुद के उन दमित स्त्री लक्षणों को दिखा सकता है। पुरुष के सामूहिक अचेतन से स्त्रीत्व की इन अनुमानित प्रतिमाओं को एनीमा कहा जाता है। इसी प्रकार स्त्री को भी एक मर्दाना छवि विरासत में मिली है, जिसे एनीमस कहा जाता है। ये आद्य प्ररूप

प्रत्येक लिंग का विपरीत लिंग के सदस्यों को प्रतिक्रिया देने और समझने के लिए प्रेरित करते हैं और उसके बिना मनुष्य के अधूरे होने का खतरा रहता है।

छाया : वैयक्तिक अचेतन में कुछ अस्वीकार्य एवं दमित उद्देश्य एवं इच्छाएं होती हैं, जो हमारे व्यक्तित्व को अवांछनीय पहलू है। युंग (1948) का मानना था कि छाया आद्य प्रारूप प्रवृत्ति है जो हमें विरासत में मिली है। इसे व्यक्तित्व का “अंधेरा भाग” भी कहा जाता है। जिस पक्ष को हम पहचानना नहीं चाहते हैं। यह आद्य प्रारूप तब प्रकाश में आता है जब हम किसी अन्य व्यक्ति के साथ असहज महसूस करते हैं लेकिन यह निर्दिष्ट करने में असमर्थ हो सकता है कि हमें क्यों उकसाया गया है।

आत्म

आत्म वह है जो व्यक्ति को सम्पूर्णता की ओर प्रेरित करता है और इस प्रकार इसे व्यक्तित्व का मध्य बिन्दु माना जाता है जिसके चारों ओर अन्य सभी प्रणालियों को इकट्ठा किया जाता है, जो व्यक्तित्व को स्थिरता, संतुलन और एकात्मकता के साथ प्रेरित करता है।



चित्र 7.1: क्लार्क विश्वविद्यालय, 1909 में युंग एवं फ्रायड और अन्य साथियों के साथ, गुप फोटो पहली पंक्ति (बाएँ से दायीं ओर) सिग्मंड फ्रायड, जी स्टैनली हॉल, कार्ल युंग, पीछे की पंक्ति में (बाएँ से दायीं ओर) अब्राहम बिल, अर्नेस्ट जोन्स, सैंडर फेरेंकी।

स्रोत : https://en.wikipedia.org/wiki/Carl_Jung

7.1.2 आद्यप्रारूप एवं समक्रमिकता

टाद्यप्रारूप तनाव के समय में अपनी उपस्थिति बनाये रख सकते हैं, भले ही व्यक्ति को चेतन में रहते हुए तनाव महसूस न हो। इसके अलावा, युंग ने सुझाव दिया कि आद्य प्रारूप कार्य-कारण से भी ऊँचा जा सकते हैं। उन्होंने प्रस्तावित किया कि कुछ घटनाएँ कारण और प्रभाव के बजाय अर्थ से सम्बन्धित होती हैं। इन घटनाओं को “सार्थक

संयोग” कहा गया है और इस सिद्धान्त को समक्रमिकता कहा गया (टरनास, 2006, प्रष्ठ 50)। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति बिना किसी हाल के सम्पर्क के किसी अपने सगे-सम्बन्धी का स्वप्न देख सकता है, तथा अगले दिन उसकी मृत्यु की खबर प्राप्त कर सकता है। दो घटनाएँ, स्वप्न और सम्बन्धी की मृत्यु के कारण असंबंधित हैं, क्योंकि स्वप्न रिश्तेदार की मृत्यु का कारण नहीं था लेकिन वे एक सार्थक समानता के माध्यम से सम्बन्धित हैं।

7.1.3 अभिवृत्ति एवं कार्य : मनोवैज्ञानिक प्रकार

युंग व्यक्तित्व के दो महत्वपूर्ण आधार अथवा अभिवृत्ति *बर्हिमुखता* तथा *अन्तर्मुखता* के लिए प्रतिष्ठित हैं। बर्हिमुखता की अभिवृत्ति बाहरी दुनियां की ओर होती है व इसमें वस्तुनिष्ठता और आत्मनिष्ठता अधिक होती है। दोनों ही अभिवृत्तियाँ व्यक्ति में मौजूद रहती हैं, परन्तु यह आमतौर पर किसी एक पर हावी है और चेतन है जबकि दूसरा अचेतन है। यहाँ यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यह विवरण व्यक्ति के आधार से सम्बन्धित है न कि समाजशीलता के स्तर से। जिन तरीकों से लोग सूचनाओं को प्राप्त करते हैं तथा सूचना का संसाधन करते हैं, युंग ने ऐसे दो जोड़ा कार्यों का परिचय दिया। इस प्रकार चार मूलभूत मनोवैज्ञानिक कार्य इस प्रकार हैं -

- *चिन्तन* (बौद्धिक/विचारात्मक कार्य) : विश्व व स्वयं की प्रकृति को समझने में सहायक होता है।
- *भाव* (मूल्यांकन कार्य) : आत्मनिष्ठ अनुभवों जैसे - खुशी, दर्द, डर, एवं क्रोध आदि को जानने में सहायक।
- *संवेदन* (अवधारणात्मक/वास्तविक कार्य) : मूर्त तथ्यों अथवा विश्व का प्रतिनिधित्व समझने में सहायक होता है।
- *अन्तर्ज्ञान* : यह विचारों, भावनाओं एवं तथ्यों से परे है, और अचेतन प्रक्रियाओं या अवसीम सामग्री द्वारा प्रत्यक्षित है।

चिन्तन एवं भाव को एक साथ तर्कसंगत प्रक्रिया माना गया है, जैसा कि इसमें अमूर्तता, कारक तथा निर्णय शामिल होते हैं। दूसरी ओर संवेदन एवं अन्तर्ज्ञान, तर्कहीन कार्यों के रूप में माना गया है क्योंकि वे मूर्त एवं आकस्मिकता की धारणा पर आधारित होते हैं। आमतौर पर चारों में से एक अन्य तीन की तुलना में अत्यधिक भिन्न होता है और चेतन प्रक्रियाओं में इसकी मुख्य भूमिका होती है। इसे श्रेष्ठ कार्य के रूप में जाना गया है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि युंग का व्यक्तित्व प्ररूपविज्ञान की व्याख्या पारस्परिक रूप से अनन्य, सकल वर्गीकरण नहीं है, बल्कि कार्यों, दृष्टिकोणों एवं स्तर के विभिन्न क्रम-परिवर्तन की अनुमति है।

7.1.4 तुल्यता एवं इन्द्रोपी का नियम

युंग का मनोगत्यात्मक दृष्टिकोण दो मूल नियमों पर आधारित है : तुल्यता एवं इन्द्रोपी। तुल्यता का नियम, जैसा कि मानसिक कार्यप्रणाली पर लागू होता है, यदि कोई विशेष मूल्य कमजोर होता है या बिगड़ता है, तब उस मूल्य द्वारा दर्शायी गई ऊर्जा का योग व्यक्ति के मन से पूर्णतः नहीं हटेगा, लेकिन कुछ अन्य नये मूल्यों का पुनर्निर्माण करेगा। इस प्रकार ऊर्जा परिवर्तित तो हो सकती है परन्तु लुप्त नहीं हो सकती है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति ने शौक में रुचि खो दी हो, तब उसने

अपने अन्दर एक अन्य रुचि की पैदा की होगी। इस बात की संभावना है कि एक लड़का जो किसी लड़की की ओर आकर्षित होता है, हो सकता है कि वह अपनी ऊर्जा का उपयोग कर रहा हो, जिसे वह पहले किसी विशेष शौक पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए कर रहा था। यह भी संभव है कि एक मूल्य से लुप्त हुई ऊर्जा कई अन्य दूसरे मूल्यों में वितरित हो सकती है।

इन्द्रोपी का नियम जैसा कि युंग ने अपनाया कि संतुलन या संतुलन हासिल करने की दिशा में मन को विभिन्न प्रणालियों में एक ही प्रवृत्ति है। इस प्रकार यदि असमान सामर्थ्य के दो मूल्य हैं, तो ऊर्जा एक मजबूत संतुलन तक कमजोर मूल्य से होकर गुजरती है। व्यक्तित्व में बलों का एक स्थायी संतुलन कभी स्थापित नहीं किया जा सकता है क्योंकि ऊर्जा या तो संकलित है या घटती है, जिससे संतुलन बिगड़ जाता है। सही संतुलन एक आदर्श स्थिति है और आत्म में विद्यमान है।

7.1.5 व्यक्तित्व विकास

युंग द्वारा व्यक्तित्व विकास के परिप्रेक्ष्य में दो महत्वपूर्ण बिन्दुओं पारस्परिकता एवं पारलौकिक कार्यकी चर्चा हुई- उन्होंने व्यक्तित्व विकास की अवस्थाओं को चार मूल अवस्थाओं में विभाजित किया - बाल्यावस्था, युवावस्था, मध्यावस्था एवं वृद्धावस्था। उन्होंने मध्यम आयु या जीवन के दूसरे छमाही (मध्य-जीवन) पर अधिक बल दिया। इस स्तर पर, उनका मानना था कि व्यक्तियों के पास व्यक्तित्व के एक मुख्य लक्ष्य को पूरा करने का पर्याप्त अवसर है - आत्म बोध। वैयक्तिकता अपने मूलरूप में एक सम्पूर्ण व्यक्ति या व्यक्ति बनने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। उत्कृष्ट कार्य सामान्य विकास से परे जाने और समरसता में व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को साथ लाने के लिए जाना जाता है। इस प्रकार यहाँ तक कि चेतन एवं अचेतन सामग्री को एकीकृत करता है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा मनोग्रन्थियों, मानसिक ऊर्जा जैसी अवधारणाओं की आलोचना की गई है, लेकिन मनोविज्ञान के क्षेत्र में युंग के प्रभाव को कोई भी नहीं नकार सकता है और न ही इस हद तक कि उन्होंने कई और सिद्धान्तवादियों और सैद्धांतिक अवधारणाओं को प्रेरित किया है, जो हमारे लिए क्षेत्र का एक और पक्ष खोलना।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) युंग के अनुसार सामूहिक अचेतन संकल्पना की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आद्यप्ररूप को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

3) व्यक्तित्व के दो महत्वपूर्ण आधार अथवा अभिवृत्तियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

4) तुल्यता नियम की व्याख्या कीजिए।

7.2 अल्फ्रेड एडलर



चित्र 7.3 : अल्फ्रेड एडलर

स्रोत: <http://www.sonoma.edu/psychology/psychart.htm>
A Public Domain Library of Famous Psychologists, Sonoma University, Public Domain, <https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=6381164>

अल्फ्रेड एडलर का प्राथमिक प्रशिक्षण चिकित्सा क्षेत्र में हुआ था और इस प्रकार, उन्होंने मनोचिकित्सा के क्षेत्र में अभ्यास किया। उन्होंने असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में अहम् योगदान दिया और इसके क्षेत्र का विस्तार करने और इसमें सामान्य व्यक्तित्व को शामिल करने से पूर्व तंत्रिकाताप का सिद्धान्त तैयार किया। फ्रायड के सिद्धान्त के विपरीत, एडलर के सिद्धान्त में व्यवहार की गतिशीलता में यौन प्रवृत्ति की भूमिका को कम कर दिया गया। इसके बजाय उन्होंने कहा कि मनुष्य मुख्य रूप से सामाजिक है और यौन प्राणी नहीं है, इस प्रकार वह सामाजिक हित से प्रेरित है। एडलर के **व्यक्तिगत मनोविज्ञान** आकार देने वाली अवधारणाएँ निम्नवत् हैं :

7.2.1 हीनता-श्रेष्ठता

आंगिक हीनता एवं क्षतिपूर्ति

एडलर ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति उस अंग को बीमारी का शिकार समझता है जो कम विकसित है, जो सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर रहा है और मुख्य रूप से जन्म से "हीन" है। यह हीनता आनुवंशिकता के कारण या विकासात्मक असामान्यता के कारण मौजूद हो सकती है। (उदाहरण के लिए : क्षतिग्रस्त अंग, बोलने का दोष, संवेदी दोष इत्यादि) पर्यावरणीय मांगों ने हीन-अंग पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, ताकि व्यक्ति के जीवनानुकूल स्थिति बन सके। एडलर ने बल दिया कि दोषपूर्ण अंग वाला व्यक्ति अक्सर गहन प्रशिक्षण के साथ इसे मजबूत करके इस कमजोरी को दूर करने की कोशिश करता है। बड़ी हुई वृद्धि एवं कार्यात्मक शक्ति के तहत हीन अंग पूर्व कमी